

मध्य प्रदेश का बौद्ध सर्कट

चर्चा में क्यों?

मध्य प्रदेश के साँची में बौद्ध सर्कटि ने बुद्ध पूर्णमा के लिये पूरे विश्व से कई तीर्थयात्रियों को आकर्षित किया, जो प्रत्येक वर्ष 23 मई 2024 को बौद्धों द्वारा मनाया जाने वाला एक महत्त्वपूर्ण त्योहार है।

मुख्य बिंदु:

- मध्य प्रदेश पर्यटन बोर्ड (MPTB) एक बौद्ध सर्कटि विकसित कर रहा है जो साँची और राज्य के अन्य स्थलों को देश के बौद्ध धर्म के दो प्रमुख केंद्रों बोधगया तथा सारनाथ से जोड़ेगा।
- इसका उद्देश्य इन स्थानों पर आने वाले बौद्ध तीर्थयात्रियों को मध्य प्रदेश में बौद्ध वरिष्ठ स्थलों के बारे में शिक्षित करना है।
- स्वदेश दर्शन योजना के तहत, MPTB ने साँची, मंदसौर, धार, सतना, रीवा, सतधारा, सोनारी, मुरेल खुरद और ग्यारसपुर जैसे स्थलों को विकसित करने के लिये 70 करोड़ रुपए खर्च किये हैं।
- इस परियोजना में मार्शल हाउस, तलहटी, पहुँच मार्ग, पहाड़ी, लाइट एंड साउंड शो, साँची में पर्यटक सुविधा केंद्र, चैतन्य गरिबिहार के आस-पास परदृश्य, साँची के आधार पर स्थिति कनक सागर झील का विकास एवं सौंदर्यीकरण, एक बौद्ध थीम पार्क, सक्वायर रोड जंक्शन का सौंदर्यीकरण, रेलवे स्टेशन से स्तूप के तलहटी तक पथ में सुधार और सतधारा, सोनारी, मुरेल खुरदा, ग्यारसपुर में ध्यान कथिस्व तथा परसिर का निर्माण शामिल है।

बुद्ध पूर्णमा

गौतम बुद्ध

इन्हें भगवान विष्णु के 10 अवतारों (दशावतार) में से 8वाँ अवतार माना जाता है

जन्म

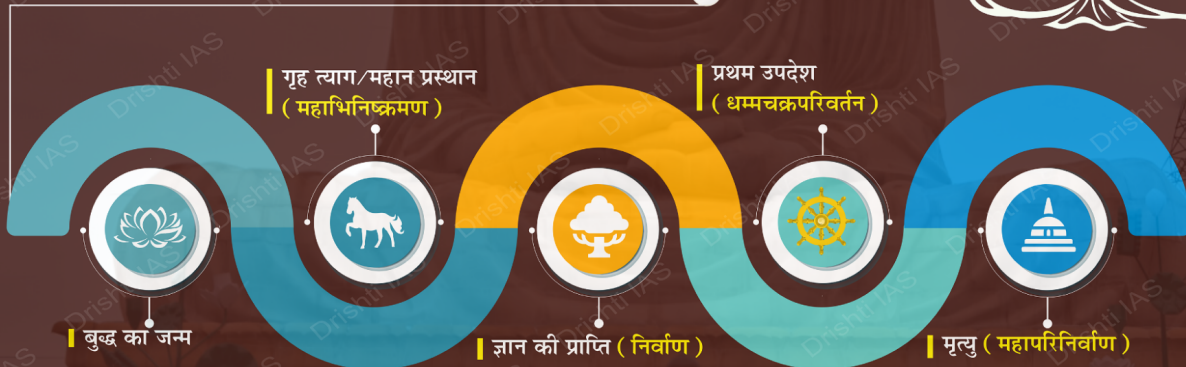
- सिद्धार्थ के रूप में जन्म (563 ईसा पूर्व)
- जन्मस्थान- लुम्बिनी (नेपाल)
- कपिलवस्तु के निकट

माता-पिता

- पिता- कपिलवस्तु के निर्वाचित शासक;
शाक्य गणसंघ के मुखिया
- माता - कोशल वंश की राजकुमारी



महत्त्वपूर्ण घटनाएँ



बुद्ध ने स्वयं को तथागत (वह जो जैसा आया था, वैसा ही चला गया) के रूप में संदर्भित किया और बौद्ध ग्रंथों में इन्हें भागवत के रूप में संबोधित किया गया है।

समकालीन व्यक्ति

- वर्धमान महावीर
- बिम्बिसार
- अजातशत्रु

बुद्ध से जुड़े अन्य महत्त्वपूर्ण स्थल

- बोधगया (ज्ञान प्राप्ति) (ज्ञान प्राप्ति के बाद वे बुद्ध के नाम से जाने गए)
- सारनाथ (प्रथम उपदेश)
- वैशाली (अंतिम उपदेश)
- कुशीनगर (मृत्यु (487 ई.पू.) का स्थान)

- बुद्ध पूर्णमा को 'वेसाक' के नाम से भी जाना जाता है। यह तथि राजकुमार सदिधार्थ के जन्म का स्मरण कराती है, जो बाद में गौतम बुद्ध के नाम से जाने गए और बाद में उन्होंने बौद्ध धर्म की स्थापना की।
- बुद्ध पूर्णमा का त्योहार सामान्यतः अप्रैल या मई माह में मनाया जाता है, यह हट्टि माह वैशाख की पूर्णमा के दिन मनाया जाता है एवं विशेष रूप से इसका आयोजन दक्षिण, दक्षिण पूर्व और पूर्वी एशिया में किया जाता है।
- बुद्ध पूर्णमा को 'तहिरा-धन्य दविस' माना जाता है क्योंकि यह बुद्ध के जन्म, ज्ञानोदय और महापरिनिर्वाण का प्रतीक है। वर्ष 1999 से संयुक्त राष्ट्र द्वारा इसे 'UN वेसाक दविस' के रूप में मान्यता दी गई।

स्वदेश दर्शन योजना

- इसे वर्ष 2014-15 में देश में थीम आधारित पर्यटन सर्कटि के एकीकृत विकास के लिये शुरू किया गया था। इस योजना के तहत पंद्रह विषयगत सर्कटों की पहचान की गई है- बौद्ध सर्कटि, तटीय सर्कटि, डेज़र्ट सर्कटि, इको सर्कटि, हेरिटेज सर्कटि, हिमालयन सर्कटि, कृषि सर्कटि, नॉर्थ ईस्ट सर्कटि, रामायण सर्कटि, ग्रामीण सर्कटि, आध्यात्मिक सर्कटि, सूफी सर्कटि, तीर्थंकर सर्कटि, जनजातीय सर्कटि, वन्यजीव सर्कटि।
- यह केंद्र द्वारा 100% वित्तपोषित है और केंद्र एवं राज्य सरकारों की अन्य योजनाओं के साथ अभिसरण हेतु तथा केंद्रीय सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों और कॉर्पोरेट क्षेत्र की कॉर्पोरेट सामाजिक ज़िम्मेदारी (CSR) पहल के लिये उपलब्ध स्वैच्छिक वित्तपोषण का लाभ उठाने के प्रयास किये जाते हैं।

PDF Refernece URL: <https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/madhya-pradesh-s-buddhist-crcuit>

